

स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की कुल मानसिक स्वास्थ्य एवं युवा समस्या के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन

पूनम शाक्या

शोध-छात्रा, शिक्षाशास्त्र, राजा श्रीकृष्ण दत्त पी0जी0 कॉलेज, जौनपुर, सम्बद्ध वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ0प्र0)

सारांश— समस्या कथन स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की कुल मानसिक स्वास्थ्य एवं युवा समस्या के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना है। अध्ययन में वर्णनात्मक शोध की सहसम्बन्धात्मक विधि का प्रयोग किया है। न्यादर्श के रूप में जौनपुर जनपद में स्थित एवं वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर से सम्बद्ध महाविद्यालयों की स्नातक कक्षाओं में अध्ययनरत 300 पुरुष विद्यार्थियों का चयन बहुस्तरित न्यादर्शन विधि द्वारा निम्नांकित ढंग से किया है। उपकरण के रूप में मानसिक स्वास्थ्य—**मेण्टल हेल्थ बैटरी** (एम एच बी) निर्माता—ए0के0 सिंह एवं ए0एस0 गुप्ता एवं युवा समस्या—**यूथ प्राब्लम इन्वेण्ट्री** (वाई पी आई) निर्माता—एस0 वर्मा द्वारा निर्मित है। प्रदत्तों के संकलन एवं परिणाम के पश्चात् निर्मित की गयी शून्य-परिकल्पनाओं के परीक्षण के लिए गुणनफल आधूर्ण सहसम्बन्ध तकनीक का उपयोग किया जा रहा है। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि— स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की स्वायत्ता, सुरक्षा—असुरक्षा, स्वप्रत्यय, बुद्धि एवं कुल मानसिक स्वास्थ्य उनकी पारिवारिक समस्या, स्कूल/कॉलेज समस्या, सामाजिक समस्या तथा वैयक्तिक समस्या एवं अति संवेदनशीलता के साथ सम्बन्धित नहीं है जिसका कारण यह हो सकता है कि स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थी स्वायत्ता, सुरक्षा—असुरक्षा, स्वप्रत्यय, बुद्धि एवं कुल मानसिक स्वास्थ्य तथा उनकी पारिवारिक, स्कूल/कॉलेज, सामाजिक समस्या तथा वैयक्तिक समस्या एवं अति संवेदनशीलता से सम्बन्धित उद्दीपकों के प्रति समान अनुक्रिया करते होंगे।

मुख्य शब्द— स्नातक, पुरुष विद्यार्थी, मानसिक स्वास्थ्य, संवेदनशीलता, सम्पूर्ण समायोजन, स्वायत्ता, सुरक्षा—असुरक्षा, स्वप्रत्यय, बुद्धि, पारिवारिक, स्कूल/कॉलेज, सामाजिक समस्या तथा वैयक्तिक समस्या एवं अति संवेदनशीलता।

प्रस्तावना— स्नातक स्तर पर छात्र-छात्राओं के वैयक्तिक समस्या सबसे बड़ी समस्या होती है। स्नातक स्तर के छात्र किशोरावस्था में होते हैं तथा यह अवस्था छात्र-छात्राओं के शारीरिक, भावनात्मक और व्यवहार सम्बन्धी परिवर्तनों की अवस्था होती है। स्नातक स्तर पर युवाओं में होने वाली समस्याओं से जो विद्यार्थियों अपने आपको समायोजित कर लेते हैं उनके मानसिक स्वास्थ्य, व्यक्तित्व पर बुरा प्रभाव कम पड़ता है, जबकि इसके विपरीत यदि वे अपने आपको इन समस्याओं से समायोजित नहीं हो पाते हैं तो उनके मानसिक स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व ऋणात्मक रूप से प्रभावित हो जाता है।

व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए स्वस्थ्य शरीर के साथ स्वस्थ्य मस्तिष्क का होना अत्यन्त आवश्यक है। प्रायः यह देखा जाता है कि संसार में शारीरिक और मानसिक दृष्टि से स्वस्थ्य व्यक्ति ही उच्च सफलता को प्राप्त करते हैं। किसी भी राष्ट्र अथवा देश के नवयुवक उस राष्ट्र के विकास एवं निर्माण की आधारशिला होते हैं। मानसिक रूप से स्वस्थ एवं अपने परिवेश से समायोजित युवा वर्ग ही स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं। मानसिक स्वास्थ्य, व्यक्ति द्वारा समायोजन करने की योग्यता का परिणाम होता है। जब व्यक्ति अपनी इच्छाओं, महत्वाकांक्षाओं एवं आदर्शों को जीवन की वास्तविकताओं के अनुरूप ढालकर अपने तथा वातावरण के मध्य एक सन्तोषजनक सम्बन्ध स्थापित कर लेता है तब उसे समायोजित व्यक्ति कहा जा सकता है। समायोजन सदैव ही व्यक्ति के लिए सुखदायी होता है तथा समायोजन से व्यक्ति को मानसिक संघर्षों से छुटकारा प्राप्त हो जाता है।

विकास तथा आधुनिकीकरण की दिशा में अग्रसर हो रहे भारतीय समाज में अन्तर्पीढ़ी संघर्ष विद्यमान होना स्वाभाविक ही है। आज की मँहगाई एवं बेरोजगारी के दौर में परिवार सीमित ही नहीं होता जा रहा है बल्कि एकांकी परिवारों की संख्या बढ़ती जा रही है। यह देखने को मिलता है कि संयुक्त परिवार में युवाओं को पढ़ने में काफी समस्यायें उत्पन्न होती हैं। पारिवारिक समस्याओं को देखते हुए युवाओं का मन नौकरी, पेशा इत्यादि में लगने लगता है जिससे उनकी आगे की पढ़ाई अवरुद्ध हो जाती है जो उनके लिए एक समस्या ही है।

आजकल हमारे समाज, विद्यालय, परिवार, एवं शैक्षिक विकास में अस्थिरता व असन्तोष की भावना व्याप्त है। इस अस्थिरता के बाहरी व आन्तरिक दो कारण हैं। बाह्य कारण के अन्तर्गत सामाजिक, आर्थिक दशा तथा समाज का राजनैतिक वातावरण है। आन्तरिक कारणों में सामाजिक प्रशासन शिक्षण तथा छात्रों से सम्बन्धित समस्यायें हैं। अनेक अध्ययनों से यह स्पष्ट है कि छात्रों की यह अस्थिरता, आर्थिक-सामाजिक स्तर, प्रवेश के लिए प्रमाणित मानदण्ड का अभाव, अध्यापकों तथा प्रशासकों द्वारा पक्षपातपूर्ण व्यवहार तथा बेरोजगारी को लेकर है। ये कारण कम या अधिक मात्रा में युवाओं में समस्यायें उत्पन्न करते हैं। ये ऐसे कारक हैं जिनके कारण औपचारिक शिक्षा प्राप्त करना कठिन हो जाता है और बालक-बालिकाओं का शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक एवं नैतिक विकास बाधित होता है।

स्नातक स्तर पर युवाओं में पारिवारिक एवं विद्यालयीय समस्याओं के साथ ही साथ उनमें में सामाजिक-आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याएँ देखने को मिलती हैं, जिससे युवा विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व तो प्रभावित होता ही है उन्हें सामंजस्य ख्यालित करने में कठिनाई उत्पन्न होती है।

उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए अध्ययनकर्त्री ने स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की मानसिक स्वास्थ्य एवं युवा समस्याओं के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करने का सार्थक प्रयास किया है। जिसके लिए समस्या-कथन निम्नांकित ढंग से किया गया है।

समस्या कथन—

स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की कुल मानसिक स्वास्थ्य एवं युवा समस्या के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन।

अध्ययन का उद्देश्य—

अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया है—

1. स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की कुल मानसिक स्वास्थ्य एवं युवा समस्या के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
 - 1.1 स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की संवेगात्मक स्थिरता एवं युवा समस्या के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
 - 1.2 स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों के सम्पूर्ण समायोजन एवं युवा समस्या के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
 - 1.3 स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की स्वायत्तता एवं युवा समस्या के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
 - 1.4 स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की सुरक्षा-असुरक्षा एवं युवा समस्या के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
 - 1.5 स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों के स्वप्रत्यय एवं युवा समस्या के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
 - 1.6 स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की बुद्धि एवं युवा समस्या के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
- अध्ययन की परिकल्पनाएँ—

अध्ययन में निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण किया है—

- स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की कुल मानसिक स्वास्थ्य एवं युवा समस्या के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
- 1.1 स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की संवेगात्मक स्थिरता एवं युवा समस्या के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
- 1.2 स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों के सम्पूर्ण समायोजन एवं युवा समस्या के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
- 1.3 स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की स्वायत्तता एवं युवा समस्या के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
- 1.4 स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की सुरक्षा—असुरक्षा एवं युवा समस्या के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
- 1.5 स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों के स्वप्रत्यय एवं युवा समस्या के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
- 1.6 स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की बुद्धि एवं युवा समस्या के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

शोध प्रविधि—

अध्ययन में वर्णनात्मक शोध की सहसम्बन्धात्मक विधि का प्रयोग किया है। न्यादर्श के रूप में जौनपुर जनपद में स्थित एवं वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर से सम्बद्ध महाविद्यालयों की स्नातक कक्षाओं में अध्ययनरत् 300 पुरुष विद्यार्थियों का चयन बहुस्तरित न्यादर्शन विधि द्वारा निम्नांकित ढंग से किया है। उपकरण के रूप में मानसिक स्वास्थ्य— मेण्टल हेल्थ बैटरी (एम एच बी) निर्माता— ए०के० सिंह एवं ए०एस० गुप्ता एवं युवा समस्या— यूथ प्राब्लम इन्वेण्ट्री (वाई पी आई) निर्माता—एस० वर्मा द्वारा निर्मित है। प्रदत्तों के संकलन एवं परिगणन के पश्चात् निर्मित की गयी शून्य—परिकल्पनाओं के परीक्षण के लिए गुणनफल आधूर्ण सहसम्बन्ध तकनीक का उपयोग किया जा रहा है।

परिकल्पनाओं का परीक्षण एवं व्याख्या—

- स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की संवेगात्मक स्थिरता एवं युवा समस्या के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन सारणी संख्या—1

स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की संवेगात्मक स्थिरता एवं युवा समस्या के मध्य सहसम्बन्ध

क्र०सं०	युवा समस्या की विमाँ॑	सहसम्बन्ध गुणांक r (N=300)
1	पारिवारिक समस्या	.148*
2	स्कूल / कॉलेज समस्या	-.157*
3	सामाजिक समस्या	-.030
4	वैयक्तिक समस्या एवं अति संवेदनशीलता	-.062

*.05 स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की संवेगात्मक स्थिरता एवं उनकी सामाजिक समस्या तथा वैयक्तिक समस्या एवं अति संवेदनशीलता के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान क्रमशः $-.030$ तथा $-.062$ है जो $.05$ स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः यह कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की संवेगात्मक स्थिरता उनकी सामाजिक समस्या तथा वैयक्तिक समस्या एवं अति संवेदनशीलता के साथ सम्बन्धित नहीं है।

स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की संवेगात्मक स्थिरता एवं उनकी पारिवारिक समस्या तथा स्कूल / कॉलेज समस्या के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान क्रमशः $.148$ तथा $-.157$ है जो $.05$ स्तर पर सार्थक है। अतः यह कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की संवेगात्मक स्थिरता उनकी

पारिवारिक समस्या के साथ सकारात्मक तथा स्कूल/कॉलेज समस्या के साथ नकारात्मक रूप से सम्बन्धित है।

2. स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों के सम्पूर्ण समायोजन एवं युवा समस्या के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन सारणी संख्या-2

स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों के सम्पूर्ण समायोजन एवं युवा समस्या के मध्य सहसम्बन्ध

क्र0सं0	युवा समस्या की विमाँ	सहसम्बन्ध गुणांक r (N=300)
1	पारिवारिक समस्या	.118*
2	स्कूल / कॉलेज समस्या	-.071
3	सामाजिक समस्या	-.012
4	वैयक्तिक समस्या एवं अति संवेदनशीलता	-.024

*.05 स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या 2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों के सम्पूर्ण समायोजन एवं उनके स्कूल/कॉलेज समस्या, सामाजिक समस्या तथा वैयक्तिक समस्या एवं अति संवेदनशीलता के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान क्रमशः -.071, -.012 तथा -.024 है जो .05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः यह कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों के सम्पूर्ण समायोजन उनके स्कूल/कॉलेज समस्या, सामाजिक समस्या तथा वैयक्तिक समस्या एवं अति संवेदनशीलता के साथ सम्बन्धित नहीं है।

स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों के सम्पूर्ण समायोजन एवं उनकी पारिवारिक समस्या के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान .118 है जो .05 स्तर पर सार्थक है। अतः यह कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों का सम्पूर्ण समायोजन उनकी पारिवारिक समस्या के साथ सकारात्मक रूप से सम्बन्धित है।

3 स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की स्वायत्ता एवं युवा समस्या के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन

सारणी संख्या-3

स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की स्वायत्ता एवं युवा समस्या के मध्य सहसम्बन्ध

क्र0सं0	युवा समस्या की विमाँ	सहसम्बन्ध गुणांक r (N=300)
1	पारिवारिक समस्या	.036*
2	स्कूल / कॉलेज समस्या	.040*
3	सामाजिक समस्या	.047*
4	वैयक्तिक समस्या एवं अति संवेदनशीलता	.031*

*.05 स्तर पर सार्थक नहीं

सारणी संख्या 3 के अवलोकन से स्पष्ट है कि स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की स्वायत्ता एवं उनकी पारिवारिक समस्या, स्कूल/कॉलेज समस्या, सामाजिक समस्या तथा वैयक्तिक समस्या एवं अति संवेदनशीलता के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान क्रमशः .036, .040, .047 तथा .031 है जो .05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः यह कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की स्वायत्ता उनकी पारिवारिक समस्या, स्कूल/कॉलेज समस्या, सामाजिक समस्या तथा वैयक्तिक समस्या एवं अति संवेदनशीलता के साथ सम्बन्धित नहीं है।

**4. स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की सुरक्षा-असुरक्षा एवं युवा समस्या के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन
सारणी संख्या-4**

स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की सुरक्षा-असुरक्षा एवं युवा समस्या के मध्य सहसम्बन्ध

क्र0सं0	युवा समस्या की विमाँ	सहसम्बन्ध गुणांक r (N=300)
1	पारिवारिक समस्या	.060*
2	स्कूल / कॉलेज समस्या	.000*
3	सामाजिक समस्या	-.037*
4	वैयक्तिक समस्या एवं अति संवेदनशीलता	.009*

*.05 स्तर पर सार्थक नहीं

सारणी संख्या 4 के अवलोकन से स्पष्ट है कि स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की सुरक्षा-असुरक्षा एवं उनकी पारिवारिक समस्या, स्कूल / कॉलेज समस्या, सामाजिक समस्या तथा वैयक्तिक समस्या एवं अति संवेदनशीलता के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान क्रमशः .060, .000, -.037 तथा .009 है जो .05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः यह कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की सुरक्षा-असुरक्षा उनकी पारिवारिक समस्या, स्कूल / कॉलेज समस्या, सामाजिक समस्या तथा वैयक्तिक समस्या एवं अति संवेदनशीलता के साथ सम्बन्धित नहीं है।

**5. स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों के स्वप्रत्यय एवं युवा समस्या के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन
सारणी संख्या-5**

स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों के स्वप्रत्यय एवं युवा समस्या के मध्य सहसम्बन्ध

क्र0सं0	युवा समस्या की विमाँ	सहसम्बन्ध गुणांक r (N=300)
1	पारिवारिक समस्या	.009*
2	स्कूल / कॉलेज समस्या	-.018*
3	सामाजिक समस्या	-.061*
4	वैयक्तिक समस्या एवं अति संवेदनशीलता	-.007*

*.05 स्तर पर सार्थक नहीं

सारणी संख्या 5 के अवलोकन से स्पष्ट है कि स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों के स्वप्रत्यय एवं उनकी पारिवारिक समस्या, स्कूल / कॉलेज समस्या, सामाजिक समस्या तथा वैयक्तिक समस्या एवं अति संवेदनशीलता के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान क्रमशः .009, -.018, -.061 तथा -.007 है जो .05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः यह कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों का स्वप्रत्यय उनकी पारिवारिक समस्या, स्कूल / कॉलेज समस्या, सामाजिक समस्या तथा वैयक्तिक समस्या एवं अति संवेदनशीलता के साथ सम्बन्धित नहीं है।

**6. स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की बुद्धि एवं युवा समस्या के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन
सारणी संख्या-6**

स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की बुद्धि एवं युवा समस्या के मध्य सहसम्बन्ध

क्र0सं0	युवा समस्या की विमाँ	सहसम्बन्ध गुणांक r (N=300)
1	पारिवारिक समस्या	-.005*

2	स्कूल / कॉलेज समस्या	-.117*
3	सामाजिक समस्या	-.112*
4	वैयक्तिक समस्या एवं अति संवेदनशीलता	-.096*

*.05 स्तर पर सार्थक नहीं

सारणी संख्या 6 के अवलोकन से स्पष्ट है कि स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की बुद्धि एवं उनकी पारिवारिक समस्या, स्कूल / कॉलेज समस्या, सामाजिक समस्या तथा वैयक्तिक समस्या एवं अति संवेदनशीलता के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान क्रमशः -.005, -.117, -.112 तथा -.096 है जो .05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः यह कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की बुद्धि उनकी पारिवारिक समस्या, स्कूल / कॉलेज समस्या, सामाजिक समस्या तथा वैयक्तिक समस्या एवं अति संवेदनशीलता के साथ सम्बन्धित नहीं है।

7. स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की कुल मानसिक स्वास्थ्य एवं युवा समस्या के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन

सारणी संख्या-7

स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की कुल मानसिक स्वास्थ्य एवं युवा समस्या के मध्य सहसम्बन्ध

क्र0सं0	युवा समस्या की विमाँ	सहसम्बन्ध गुणांक r (N=300)
1	पारिवारिक समस्या	-.078*
2	स्कूल / कॉलेज समस्या	-.111*
3	सामाजिक समस्या	-.065*
4	वैयक्तिक समस्या एवं अति संवेदनशीलता	-.068*

*.05 स्तर पर सार्थक नहीं

सारणी संख्या 7 के अवलोकन से स्पष्ट है कि स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की कुल मानसिक स्वास्थ्य एवं उनकी पारिवारिक समस्या, स्कूल / कॉलेज समस्या, सामाजिक समस्या तथा वैयक्तिक समस्या एवं अति संवेदनशीलता के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान क्रमशः -.078, -.111, -.065 तथा -.068 है जो .05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः यह कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की कुल मानसिक स्वास्थ्य उनकी पारिवारिक समस्या, स्कूल / कॉलेज समस्या, सामाजिक समस्या तथा वैयक्तिक समस्या एवं अति संवेदनशीलता के साथ सम्बन्धित नहीं है।

निष्कर्ष-

अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये—

- स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की संवेगात्मक स्थिरता एवं सम्पूर्ण समायोजन उनकी सामाजिक समस्या तथा वैयक्तिक समस्या एवं अति संवेदनशीलता के साथ सम्बन्धित नहीं है।
- स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की संवेगात्मक स्थिरता एवं सम्पूर्ण समायोजन उनकी पारिवारिक समस्या के साथ सकारात्मक रूप से सम्बन्धित है।
- स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की संवेगात्मक समायोजन क्षमता उनकी स्कूल / कॉलेज समस्या से नकारात्मक रूप से सम्बन्धित है।
- स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की स्वायत्तता, सुरक्षा-असुरक्षा, स्वप्रत्यय, बुद्धि एवं कुल मानसिक स्वास्थ्य उनकी पारिवारिक समस्या, स्कूल / कॉलेज समस्या, सामाजिक समस्या तथा वैयक्तिक समस्या एवं अति संवेदनशीलता के साथ सम्बन्धित नहीं है।

स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थियों की स्वायत्तता, सुरक्षा-असुरक्षा, स्वप्रत्यय, बुद्धि एवं कुल मानसिक स्वास्थ्य उनकी पारिवारिक समस्या, स्कूल/कॉलेज समस्या, सामाजिक समस्या तथा वैयक्तिक समस्या एवं अति संवेदनशीलता के साथ सम्बन्धित नहीं है जिसका कारण यह हो सकता है कि स्नातक स्तर के पुरुष विद्यार्थी स्वायत्तता, सुरक्षा-असुरक्षा, स्वप्रत्यय, बुद्धि एवं कुल मानसिक स्वास्थ्य तथा उनकी पारिवारिक, स्कूल/कॉलेज, सामाजिक समस्या तथा वैयक्तिक समस्या एवं अति संवेदनशीलता से सम्बन्धित उद्दीपकों के प्रति समान अनुक्रिया करते होंगे।

व्यक्ति का स्वास्थ्य उसकी सबसे बड़ी पूँजी होती है। यह बात शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार से स्वास्थ्यों पर पूरी तरह खरी उतरती है। विद्यार्थियों के लिए मानसिक स्वास्थ्य का महत्व और भी अधिक है क्योंकि इसमें विद्यार्थी के व्यक्तित्व के सभी पक्षों शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक, नैतिक तथा सौन्दर्यात्मक पक्ष के पूर्ण एवं संतुलित विकास शामिल होता है। जब तक विद्यार्थी के मानसिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं होगा तब तक उसके शैक्षिक विकास की कल्पना भी नहीं किया जा सकता है। पुआ एवं अन्य (2015) का मानना है कि विद्यार्थियों का शैक्षिक निष्पादन उनके मानसिक स्वास्थ्य द्वारा प्रभावित होता है और विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ करने में माता-पिता एवं शिक्षक की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है। स्वास्थ्य समाजन व्यक्ति के समायोजन का एक महत्वपूर्ण पक्ष है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कौर, एस० (2018). इमोशनल इंटेलिजेंस इन रिलेशन टू मेंटल हेल्थ एण्ड एडजेस्टमेण्ट अमंग स्टूडेन्ट्स, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एडवान्स रिसर्च एण्ड डेवेलपमेण्ट, 3(1), 304–308।
2. कुमार, डी. (2017). कम्पैरिटिव स्टडी ऑफ मेंटल हेल्थ ऑफ आर्ट्स एण्ड साइंस स्टूडेन्ट्स, अनुसंधान विज्ञान शोध पत्रिका, 5(01).
3. गुप्ता, जी० एवं कुमार, एस० (2010). मेंटल हेल्थ इन रिलेशन टू इमोशनल इंटेलिजेंस ऐण्ड सेल्फ एफिकेसी एमंग कॉलेज स्टूडेन्ट्स। जर्नल ऑफ द इण्डियन एकेडमी ऑफ एप्लाइड सॉइकोलॉजी, 36(1), 61–67।
4. चौहान, ऐ.एस. एवं जोशी, जी.आर. (2014). प्राब्लम्स ऑफ यूथ-अ स्टडी ऑफ कॉलेज स्टूडेन्ट्स इन कॉन्ट्रोलर टू देयर जेण्डर एण्ड एजूकेशनल स्ट्रीम, एशियन रेजोनेन्स, 3(2), 175–177।
5. ढोलकिया, के० एवं० जनसारी, ए० (2005). ए स्टडी ऑफ मेंटल हेल्थ ऑफ स्टूडेन्ट्स रेजाइडिंग इन एफेक्टेड एण्ड नॉन-एफेक्टेड अर्थक्वेक एरिया ऐण्ड जेंडर। गुजरात जर्नल ऑफ सॉइकोलॉजी, (15)।
6. मेहरोत्रा, एच०पी० (1982). मेंटल हेल्थ ऐज ए कोरिलेट ऑफ इंटेलिजेंस, एजूकेशन, एकेडमिक एचीवमेंट ऐण्ड सोशियोइकोनॉमिक स्टेट्स। शोध प्रबन्ध, शिक्षाशास्त्र, जम्मू विश्वविद्यालय।
7. वाघमारे, आर.डी. (2016). ए स्टडी ऑफ साइकोलॉजिकल वेल बीइंग अमंग मेल ऐण्ड फिमेल कॉलेज स्टूडेन्ट्स, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी, 3(3), 26–31।
8. विश्व स्वास्थ्य संगठन (2004). मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देना : अवधारणायें, उभरते सबूत, अभ्यास : विकटोरियन स्वास्थ्य संवर्धन फाउण्डेशन और मेलबर्न विश्वविद्यालय के सहयोग से विश्व स्वास्थ्य संगठन, मानसिक स्वास्थ्य और मादक द्रव्यों के सेवन विभाग की एक रिपोर्ट। डब्ल्यू एच ओ, जिनेवा।
9. सिंह, एस० (2016). प्राब्लम्स ऑफ यूथ : अ स्टडी ऑफ कॉलेज स्टूडेन्ट्स इन कॉन्ट्रोलर टू देयर जेण्डर, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ होम साइंस, 2(1), 18–21।